

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥

गुरुमन्त्र लक्ष्मी



श्रीमद्भगवद्गीता
1.480 I

ASNA ARCHIVES

१
ॐ नमः श्री वज्रसत्त्वाय ॥ वज्रसत्त्वं गुर्वनन्तरं गुर्वसर्वं
द्वंद्वं नानात्रयं नदन्ति मितं हय हवं निर्मितं मयः सस्त्रिंशं धर्मा
धात्रं मुनिनां किं न गुरुं गं मधुलं वज्रधर्मो सर्वानन्दकत्रपं सहजस
खमयं दहिनां माकहो ॥ गुर्वद्वं गुर्वधर्मं गुर्वसंघं नश्ये वच गुर्ववज्रध
नश्ये वच सर्वं नमामहे ॥ संक्षेपज्ञायाम ॥ वज्रसत्त्वं चंदनं नमः ॥ व
ज्रसत्त्वं चंदनं नमः ॥ श्री ॥ तागपागमस्तकातिपुंजलवाजा महाव
त ॥ निर्विकल्पकविरह्या ना वज्रधायनमस्तु न ॥ तं स्वर्गधनयाय ॥
ॐ समस्तगुर्वज्ञाह्वं वंजाकुं कम्भं नरु वलुं स्वाहा ॥ ॥ जाकि
तं स्वर्गधनयाय ॥ ऊधहीजागमाक्रमसनापीथसर्वकथा

गुरुकथाहंसनाययिष्यामि शुद्धं दीप्य नवानि क्षं ॥ ॐ नरिष्वकसमयश्री
कुं ॥ मधुलसगासक ॥ ॐ दीप्यमंजीवंकस्वाहा ॥ नायाय ॥ ॐ हस्त
धनस्वाहा ॥ ताहाकवाय ॥ कायविलम्बनस्वाहा ॥ असहाय ॥ प्रांरुनं
निकुस्वाहा ॥ पूजाहृतसं तं स्वर्गधनयाय ॥ ॐ नमो गुरुवत्पू
ष्यकं गुवाजाय नथगताया ॥ हं कसम्भं वद्वाय ॥ नयथा ॥ ॐ पूष्य ॥ महा
पूष्यसपूष्यपूष्यसंरुवपूष्यावकिन ॥ हस्त स्वाहा ॥ पूजाहृतसमनि याय ॥
दिकायाधिष्ठाना ॥ ॐ आरुं रुं ॥ ॐ आपडां वात सखान गिन ॥ ॐ सर्व
पाप नप न रुं सर्व पाप नप न रुं ॥ आसन याय ॥ ॐ निष्ठ वज्र आसन स्वा
हा ॥ सित स रुं ॥ ॐ मनिधनि वकी नी महा प्रति सन न रुं मां सर्व सत्त्वानां

वक्रंरुद्र स्वाहा॥ चक्रंनंनिय॥ तिलकविरुषधं प्रनिकृत्वाहा॥ मंथुल
 सजाकिलंरुवनंनयक॥ कुं वज्ररुमिसलस्वाश्चर्वनथागतइधितिं
 उरुस्वाहा॥ मधुलसंसाहाननं कापयागधियागनय॥ ॥ दानं॥
 मयमं वृत्तांच सहितं गीतं च समाजलं कानि कुडं पिपिलिकापनय
 नंदीर्य क्रियास्थपनं ध्यानं कनकनं मकचिद्रुक्कवधं प्रहासलखक
 गायनापावमिनास्व उववरुनिकृत्वा मुनिमधुलंरुव नुकनकवर्क
 सर्वधारो विमकः सवमनजविशिष्टश्च वदीफाकाति धनकन
 कसमृद्धिजायते वाजवंशसुगतववगहस्मिकायकर्म शिकृत्वा
 ॥ स्नानलाहाकननयागपूयके॥ कुं चद्रार्कविमलस्वाहा॥ लाहान

वाय॥ कुंरुद्र १॥ धनस्वाहा॥ पातालनवाय॥ कुं सर्वगथागतसर्वरुद्र
 र्धधावं प्रनिकृत्वाहा॥ धनध्यानध्यानयाय॥ मन्त्राधिष्ठानरुमिमध
 यं कावादीचतुर्वीजसंज्ञातं महाएतं वायुमग्निजवावरी॥ मंशावरी
 संकावधमभमधुलं वलसीं हासनस्मितं पद्मवदुशीवज्रसखद्विरुज
 कमूरवगुक्रवर्कवज्रवज्रघट्टाधवं विविशारवनं गीतं मेघेववध
 विधुंरुद्र नीलवर्कमक्राख्यावंकनं मोविनं गुरमधुलरुदावकं ध्या
 स्वा॥ मधुलसजाकिरापुवतवायक॥ गुरमधुलरुदावकाय ऊर्ध्व
 हा मधुलपूषं म्यागा॥ पादार्चनय॥ कुं रगवंशीमद्री गुरवज्रसख
 रुदावकायपाशाचमनार्धं प्रनिकृत्वाहा॥ स्नानवाय॥ कुं हमधवव

三

此

४
अनुगादी उगदपू॥ ध्ववृद्धवाधोदधनम॥ नवा॥ धोसवधंयासिवृद्ध
धर्मग॥ धनमवा॥ धोचिरुक्तयामय सपयार्थप्रसिद्धय॥ इत्याद
यामिपवमंवाधिविचिरुक्तयंजगताहीनायदगतासर्वपापाना॥ पु
॥ धनानावानमादनाहुनाप्रणावांमंवाविष्णामिआर्याअष्टगमा
गंधिपाषटं॥ ॥ धनपापदगता॥ अनादिगति संसात्र ऊत्त
नितिववापूनऊत्तयापशुनापापं॥ कृत्तकाविनमववा॥ यश्चान
मादीकंकिंचिरुदात्तयातायमाह॥ तदनादगतामहं पश्चात्ता
पनितापिन॥ बलप्रशाअपकावायमातापिप्रिपूर्वामयाउपुपा
नपूर्वाकिवाकायवाग्वृद्धिहिरुता॥ अनेकदाषड्दृष्टनमयापापन

नायका॥ यत्कृतंदात्रनं पापं॥ तत्सर्वदगतामहंमयावाचनमूढ
न॥ यत्किंचिरुपापंमाचिरुप्रकृत्तायचसावशंप्रमथयवयमव
चनो॥ धनांपूनपश्यनपून॥ पूनअस्यमस्ययस्वन॥ नरुडकमिद
नाथंनकर्तव्यंयूनर्मया॥ आप॥ धनवलि सतंषंहायक॥ ॥
अकावामुखसर्वधर्मीनांमायन्तूत्यन्तस्वा॥ ॐ नमोभगवतेप्रतिक
स्वाहा॥ स्वानवाय॥ ॐ वृद्धायस्वाहा॥ जमायस्वाहा॥ वबुधायस्वा
हा॥ कूवनायस्वाहा॥ अ॥ यस्वाहा॥ नेमस्यस्वाहा॥ वाय्मय
स्वाहा॥ वृग्नायस्वाहा॥ वसंतयस्वाहा॥ सूर्यायस्वाहा॥ चन्द्र
यस्वाहा॥ पृथिव्येयस्वाहा॥ नागयस्वाहा॥ असुवस्यस्वाहा॥ स

वैदिगलाकपालम्। स्वाहा॥ पञ्चापचात्रपूजाः। नास्वाः। मोक्ष॥ ॐ
छादयामहाबाजा। लाकपालामहर्द्धिकादगदिकुलिगादवा
लाकपालं नमाम्यह॥ वलिविय॥ ॐ। आनूवकी। सहदेवसंघे
लीमं वलीगृह्णुमविगिष्टम्। अयनेमृत्तरूपनीष्टमापप
नीवाम्यधनाधिपम्॥ ॐ। गहनरुगाधिपनिष्ठदवाः। सहर्द्धचत्वा
र्कपितामहश्चदवासमकारविजं चनाग। धवाधनागुद्धग। ६।
संपत्ता॥ प्रणिप्रतिस्वकनिवदयनिस्वकस्वकार्तां चदिगिष्ट
रुगागृह्णुगुष्टासगनेसमना॥ सपूषदात्रागताः। ससेत्ताः। पु
ष्पवलिधूपं वलिविधिश्चरुकाः। गृह्णुगृह्णुं कुपिवकुयदं॥ ॐ

दंक्तु कर्म सरु संशुगं कु ॥ तालना ॥ वृत्तिवलिगम ॥ थन क्रमापनया
 य ॥ ॐ रुनावं सर्व सखानां सिंदिनत्वाय धामना गच्छ ध्वं वृद्धवय
 पुनश्चाय गमनाय च ॥ सावजिह्वा पातुमां वज्रधृक् संवगाव ॥ स्नान
 आगंतय ॥ धमनं कुय ॥ आशिर्वाद नय ॥ पविहृतय नि कलं नि
 र्मलं स्नान धर्म सरु वगुरुगवात् प्रीयं ग्रीवज्र स न्व ॥ ॥
 वृत्तिग्रीवमधुलस माफम् ॥ ॥ गुरुम् ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 थया लिख सिंधु व पूजा ॥ धाम विंग पनं महनि साधन ॥ आप ॥ धूप ॥
 रुगं वं ग्रीम द्गी वक्र सख व वज्रवा मा ही देवगारुडा वकाय पाशं प्रति
 कृत्वा हा ॥ स्नान वाय महनियान ॥ कुंडा किनी यस्वा हा ॥ वामा यस्वा

हा॥ खधुना हाय स्वाहा॥ वृषिनीय स्वाहा॥ स्मय कवाटक काय
 स्वाहा॥ विस्मय कवाटक काय॥ स्मय विस्मय कवाटक काय स्वा
 हा॥ काय रुपाय॥ कुंवें वरु वा बाहीय स्वाहा॥ हायाया मिनीय
 स्वाहा॥ डीं माहनीय स्वाहा॥ डीं डीं सेवादीनीय स्वाहा॥ कूं कूं से
 जामनीय स्वाहा॥ रुद्रश्च शुकाय स्वाहा॥ पंचायनालपूजा वा
 स्वा॥ गा॥ कुं नम श्रीचक्रसम्बदाय॥ सर्वहृद् हान संदं हजगदर्थ
 प्रसाधक विंतामशिडवी हूं ग्रीसम्बं नमस्तुते॥ ॥ नत्वा
 श्रीवज्रवावाही सर्वपापप्रमाचनी॥ मावविधं समीदवी वृद्धं
 हृतदायनी॥ विसर्जनयाया॥ महनी ह्य॥ सिंधूवलज्जाया

॥ सिंधूवगनक॥ उद्यागातवचक्रो॥ अनिर्जिता विधकृता॥ हा
 स्वराजगंधाविनिर्गुणाग्रैलाव्यसहिता॥ पियषधना॥ पुनकावृद्ध
 हानसागवा॥ विवाविकवृषागहनन्दसिंधाहवा॥ लावांलावविना
 व॥ श्रीवज्रवावाही कांयागुव॥ थनसिद्धिसमय॥ थकालियाकव
 हस्यमधुलदनक॥ धलमधुलथिय॥ पाकासनंवाय॥ ऊऊमान
 ने॥ मधुलसजाकिडापूचलवाय॥ ऊऊवहामधुलपूषंन्यास॥ स्वा
 नवाय॥ कुं हसध्वववनम॥ वृद्धादि॥ बहसंकि काय॥ ऊऊमा
 नयागमधुलसविहर्जनयावक॥ मधुल॥ स्वानंदवनायाग॥ तन॥ थ
 सनंकुय॥ प्रिसमाधिकागयाय॥ स्वानजाकिथगिन॥ धल३॥ ४

ॐ नमः श्री गुरुभ्यो नमः ॥ धातु ३ ॥ लाहात हाजी कुल पाठा चाना ॥
समंत्वा हवंतु मावृद्धाः ॥ गी पादि कृत स्थिताः वंजु सत्त्वह मावा
र्यदवता वलपयास्य हं ॥ वेद हवादि गम गते गत वमी सं सद्गुन
ऊरु प्रसादन ममायं हूत सं हव ॥ श्री मठ वरुदा काय जकिनी चक्र
वर्तिनी पंचरुतन त्रिकाय शाना यडा गत नमः यावका वरुजा की न्यदि
न संकल्प वंदना लोका कृत्य प्रवर्तिन्य क्तावती शानत समदा ॥ म
धुनम स्वातका किनालन ॥ स्वराव सध सर्वधर्मीनां स्वराव सदा
इ ॥ ध्यान ॥ इति शाकाय मग्न्यतां शाव ४ गी काव मद्य हूत न ह
कान हनु वर्जित नूकाव नूपना सार्थ ककाव धक्क विस्मितं सर्व सत्त्व

धवलेहका गुक्लवर्धद्विरुजसेवनात्मानेरावयत् ॥ काले ॥ कद
 नुकलम्भधन ॥ ऊं ॥ दक्षिणहस्तकावतचन्द्रमधुले ॥ स्वो ॥
 वामहस्तकावधसूर्यमधुले ॥ ॐ वज्रयन्त्रहस्ता ॥ हृदय नम
 हि स्वाहा ॥ ललाट गिषाया वाषट् ह वाक्रुषां ऊं रुहा चक्रुह रुद्र
 सर्वाङ्ग ॥ स्वो ॥ वं नालोद्ययां क्रिमावका डी किं गिरवाये वाष
 ट् ह ऊं रुहा चक्रुह रुद्र सर्वाङ्ग ॥ ॥ ऊं स्वाहा वज्र ॥ हा स्वाहा धं
 ६४ ॥ ॐ वज्रसेव संग्रामक ॥ वज्रवत्सलमन्त्रव वज्रधर्मगमय नव
 ऊ कर्मकृ नारुव ॥ वास्या वज्रथ गिन ॥ ॐ ट किं ऊं काल ३ ॥ मधु
 लयिय ॥ ॐ श्रीवज्र हृदयवक्त्रं रुद्रा किती जाल संभवं स्वा

हा॥ गरुडधियः॥ ॐ स्वस्त्युवाहाय ॐ ह्रस्वाहा॥ पूजार्थधियः॥ ॐ
 स्वस्त्युवाह सर्वविघ्नान्स्वास्त्युवाह॥ स्वास्त्युवाह॥ ॐ वज्रपुष्पधियः॥
 धूमधियः॥ ॐ वज्रधूमधियः॥ मगधियः॥ ॐ वज्रदीपधियः॥ स
 मयधियः॥ वज्रमेव यथाहा॥ वसिष्ठजा किलेश्वराय नमः॥ अ
 काशो मूल सर्वधर्माणां मां शंभुस्त्वयाः ॐ नमः॥ स्वाहा॥ तदन्त
 मनुष्यान्मनुष्यं ॥ मनुकं शकं कस्य नमः॥ कंका वध
 कयास्तं माका वलवावृणी॥ अष्टादशरुजाः ॐ कस्य स्वाधि
 याः स्वस्त्युवाह॥ कृगं सर्वकपालकृति सं धुज॥ तथा गगनध
 ० तं मनुकं वलप्रदं रुद्रकाधनूपा सं च स्वदांगसकलमं धुतं गृह

लमूकववीधं च गनयं निचातं च कव नवजोवन संपन्ना गन्धमा
 गुरुमन्त्री॥ त्रिकाशवाय॥ ॐ नमः॥ हहा कीं अस्तं स्वाहा॥ अ
 मरं मयुक्तं स एव नृप ही अमृतप्रवृत्तय कीं ॐ हका वहुवि
 तवर्धहाका वगंधनामनं कीं काववी अर्हनाचमृतनाका नं लु
 लायं ग॥ ॥ स्वास्त्युवाह काय॥ वास्त्युवाह॥ रुगवंशी म
 श्रीवावृणीदवी रुद्रावकस्पया शं प्रदी नु स्वाहा॥ स्वास्त्युवाह॥ ॐ न
 मा रुगवतं वावृणीदवी अमृतं कीं स्वाहा॥ श्रीहृषी भय स्वाहा॥
 आगंधवपी भय स्वाहा॥ श्रीदीयानपी भय स्वाहा॥ पूर्णगीरीपी
 भय स्वाहा॥ धर्मचक्राय स्वाहा॥ संहागचक्राय स्वाहा॥ नीर्वा

शचक्राय स्वाहा ॥ महामहेश्वराय स्वाहा ॥ पञ्चाः वास्याः गोप ॥
 नीलनीलांबनीलाण्मकालासंमंसीतीरक्याहंत्वाभला
 वाक्चक्रायां हवामासकि ॥ मसन ॥ **कैकावपयमं** ॥ **प्रादी**
 ॥ **ध्यानयाय** ॥ पुंगिलगिजगिस्वायांदहितकर्थः **आएएवंग**
 एगावासकर्थः वायंमध्यः द्ययचक्रायां वायुमयकांकक
 याः रुनदयागिनाहो कानागिपायः कंवकंयंकं १० काहदी
 श्रीमदः पिसिं १० सुगुहं सादुर्धः सुशंघायां नवादिमिंयादंष्ट
 एममं गुहः कृजानदीपि १० पि ० कंदापकदा कृशायक
 दाः मयापकः भवापकससानपससान ॥ **मनीसं गत्यास** ॥

हृदयः नमहिललाटः स्वाहाकं गिरवायां वापदहः वाक्यां ईकं
 हाचक्रावहृदसितसिद्धसर्वो ॥ ॥ **ध्यानयाय** ॥ पञ्चस्थ
 स्वरुदयः अकावधचक्रमधुलोपविकृष्टकैकावः **आकाववक**
 पुंकावमुक्तकृत्वाकः **आलिका** लीयकटमथः पुंक्रवककृ
 वरुं मचार्यगदकवपवितनं चक्रपमः वक्रवापिपुचिचक्रार्थ
 ॥ ॥ **वृषस्कं** धवेरायनः वदनाकः धवक्रार्थः संहृनस्कंधप
 अनृगभवः सस्कावर्कधवक्राजः विहृतस्कंधः वक्रसत्वः ॥
 वक्रथागतगीहवक्रवक्रवक्रासाहवक्रः ॥ **आगया** दंघवक्रा
 तथावीष्वावकीः वक्रयागावक्रः सस्य १० मं सूर्यवक्रः सर्वा

यत्न पुने श्रुत्य वरु. एथी धा गु पा त नी आप धा गु सा व नी. न जी.
 धा गु न क र्ष नी चा य धा गु प म नृ ग र्ध व. आ का धा गु व म का वि
 नी॥ ॥ पू र ता म्मा ली का ली प क म ध. वं का ध श स र्प म धु ल
 त स ध र्क का व प वि धा म न. ए ग व र्क कृ ष्ण व र्क. प रू रू प थ म र
 जा सा. व ऊ र चं ध ध वं. दी ती मा सा र व द न र्क वी पा ग. न ती मा सा
 द म रू र व द्वा ग. व रू रू र व रू रू सा म. व का पी त. का का सा कृ ष्ण
 उ ल का सा सा मा. रू र ता सा व क. गु क वा सा. पी ता. य म ग दी
 कृ ष्ण पी ता. य म रू र की. पी त व का. य न ड री नि. व क सा सा य म
 म थ नी सा म कृ ष्ण॥ दि ग वं ध न॥ उं रू र नी रू रू रू॥ य रू रू रू रू

१.

२

द्वा॥ ग रू रू प य रू रू रू॥ उं रू रू न य हा ए ग व न वि श्रा य रू रू रू॥ ॥
 धा न॥ न ता आ का र ग वं का व श स र्प मं धु ल. ग ल ध र्क का व द. वि
 र व व रू रू का वा धि पी त. ग ड सि नां रू रू रू ल य मा ध. व रू रू क र्धी
 का प वी य प व स. ग रू रू ग रू. व रू रू म वी र मी वि रू रू म॥ ॥ उं रू रू
 रू नी व रू रू रू व व रू रू रू रू रू उं व रू रू रू का व रू रू रू रू॥ उं व रू रू रू रू रू रू
 रू॥ उं व रू रू रू वी त न रू रू रू रू॥ उं व रू रू रू रू रू रू रू रू रू॥ उं व रू रू रू रू रू
 त ल रू रू रू॥ रू रू का व दी फा का व रू रू रू. स मी प वी व रू रू ता नी द रू रू वि
 ग्रा ह रू रू रू की ल य रू॥ उं रू रू रू रू रू रू रू रू रू रू रू रू॥ व रू रू की
 ल य रू रू रू रू रू रू रू रू॥ उं व रू रू की ल य. व रू रू रू रू रू रू रू रू रू॥

ॐ सर्वविघ्नविनायकानां कायं वाक्त्रिं वज्रकीलयं कुरु ॥
 ॐ वज्रमकरलावज्रकीलय माकाटयं कुरु ॥ ॥ कृत्तिनिवा
 कलावयं ॥ ॥ गुरुसहृदयः कंकावनस्मिन् कुरुदर्थक
 त्यागकनिष्ठस्त्वनं गत्वा गुरुस्य मनादी संसिद्धिं श्रीवज्रसम्य
 वरुणावकंसमाधुवं यं पश्येत् ॥ गुरुहृद्वाज्रसिमा लालीलाकफला
 नवकुमाकलागदृष्ट्वा जगिमुखं सति संपुजे समस्तसमयमगुलप
 वेष्टाय ॥ समवसिक्त ए मनामयारिपूजादवीलीधुपजयं ॥
 स्वरावधुकाया ॥ वासार्धतय ॥ ॥ ॐ हं हं श्री हं हं वज्रक
 प्रवचनं स्कावायपाशाचमनाघं प्रकीकृत्वा ॥ स्नानदीप ॥ ॐ

श्री हं वज्रकं हं हं हं किमीजालसंवर्धस्वाहा ॥ ॐ ३ सर्ववृद्धा
 किशीयवज्रवर्धनीयः वज्रवेशवनीयं कं कं हं हं हं हं हं हं हं हं हं
 हा ॥ मध्यम ॥ ॥ ॐ अकीनीयं हं हं ॥ नामायं हं हं ॥ खधु
 बाहायं हं हं ॥ वपीनीं हं हं ॥ वज्रकवातककायं हं हं ॥ सम
 यकवाटककायं हं हं ॥ विस्मयकवाटककाय ॥ समविस्मय
 कवाटककायं हं हं ॥ कवचप्रवधुयं हं हं ॥ कुचवत्वा
 दीयं हं हं ॥ वंधप्रणवगीयं हं हं ॥ प्रासय २ महा
 ॥ काश्य २ वीवमनीयं हं हं ॥ की २ सर्ववीयं हं हं ॥ हव
 लं कश्चवीयं हं हं ॥ हं २ क्रमजायं हं हं ॥ हं २ नेवावगी

यकुरुद॥ दहरमहासेववायकुरुद॥ पचरवायवगमयकुरुद॥ क
 कुरवसवृधिनानकालान्वसवित्पसवारकीयकुरुद॥ गुरुस
 फणाताल ~~कुरुद~~ गसर्पवानुयस्यामादवीयकुरुद॥ मा
 कशरसरुडयकुरुद॥ कीकीहयकुरुद॥ कीरखजी
 ननीयकुरुद॥ मकरचक्रवर्गयकुरुद॥ हारखधुवाहायकुरुद॥
 कीरलोहिनीयकुरुद॥ कुरुचक्रवर्गमीयकुरुद॥ कीविस्वविति
 यकुरुद॥ सिवीरमहावलयकुरुद॥ धिनीरचक्रवर्गनीयकुरुद॥
 हीवीरमहाविर्गयकुरुद॥ काकासायकुरुद॥ इतकासायकुरुद॥
 हानासायकुरुद॥ सकलासायकुरुद॥ यमदादीयकुरुद॥

रुद॥ यमउनीकुरुद॥ यमउरनीयकुरुद॥ यममथनीकुरुद॥
 द॥ चक्राग्रहयकुरुद॥ गहावगमयकुरुद॥ हानाकालान्वयकुरुद॥
 रुद॥ कलकलियनायकुरुद॥ मरुहातायकुरुद॥ लकीर
 कुरुद॥ सनायकुरुद॥ धावाधकालायकुरुद॥ किलिकला
 लयकुरुद॥ ॥ पंचायवावपजावासागाड॥ ॥ उंन
 मधुनीनकसमवायसर्वहृदयनसंदहृदगदर्थप्रसादक॥ विंम
 मनिडवीरगंशीसमवतमसुग॥ व्याकविभुमहाहानसर्वमनि
 सदास्ति॥ कृपाकाधमहावृद्धीसमवतमसुग॥ ॥ गत्यन॥
 उंनमरुगवगवीववीवभुवायकुरुद॥ उंनमरुगवगमहाक

त्वाग्निसंनिताय कुरु ॥ ॐ नमः जगन्महेश्वर्यै नमः
 वायु कुरु ॥ नमः सहस्ररूपाय वायु कुरु ॥ नमः प
 रमपास धृति शिखर खड्ग गंधविशै कुरु ॥ नमः आद्य
 क्रितां ववध वायु कुरु ॥ नमः महाधुमांधकालाय कुरु ॥ ॥
 धनहस्त पूजा ॥ पातागस वक्र चदन प्रियं नवाय ॥ ॐ नमः
 कुरु ॥ पादाद्यं नय ॥ रुगवंशी मद्यी वक्र कृगिनी रुद्रा वक्रं प
 पाशं वक्रि कुरु ॥ स्वात वाय ॥ ॐ वं वक्र वा वा हियं कुरु
 द्रुवा ॥ हाय या मियं कुरु द्रुवा ॥ डीं माहनी यं कुरु द्रुवा
 हा ॥ डीं डीं संवा ॥ वशि कुरु द्रुवा ॥ कुरु संवा मनी यं कुरु

स्वाहा ॥ रुद्रश्च धीकाय कुरु द्रुवा ॥ हवक्र सखाय स्वाहा ॥ न
 मः शिवे वाच नाय स्वाहा ॥ स्वाहा कुरु पम चर्ग शु वाय स्वाहा ॥ वा
 षट् हवत्त स रुवा य स्वाहा ॥ कुरु कुरु वक्र सखाय स्वाहा ॥ रुद्र
 २ पवमा सवजाय स्वाहा ॥ ॥ पंचा पचा वक्र पूजा वा स्वाः नाय
 ॥ यामित्या ख त्माहिनी रुगवती संचा विनी सर्वदा संवा
 मनी नथ पवस विमला ॥ ॐ गंध वी च धीका चला वा रुद्र म
 क स्वा नमः शिवी नीला सिता ॥ गेयी स्या माक्रम क्रु सं न न वंदय
 दंता दवी ॥ उत्पाद रुगवहिता वल द रुधा वी वक्र प्रलवी नीय
 ये धा रुद्र वी वक्र गंध गुह गुहो समल रुकांगि मय चं या मि स रु

१४

[illegible]

के॥ चिंगमनि इवीरुं गं श्री सस्त्रवंतमस्तु के॥ मर्वत॥ ईंका वप
 वमंदवईं कावसिदिलाने॥ ईंका वरुवगुत्तईंका वांतु नमा
 स्तु के॥ ॥ ॐ श्री श्री वक्रसम्बदि गुवलिसमा फं॥ ॥ ॐ
 नता कलसपूजा॥ मं वक्ररूपयीत्या॥ पंचगुप्तसही ननम
 लमं कुंनजा पंकुर्पा ह॥ कलसगः सरवतं रतया॥ गुं वजां मृ
 तादकथ ० ईं॥ वं धिय॥ नफ २ मस्तकफ० मधुकिनी कुल
 वृषविलास॥ ॥ ध्यान॥ गुं रटिनी वंकावपविनतं नानाव
 त्रमयंकल० समाकावजं गुं काधमादया तवस्थविलास० त
 दनससदवगा विचिंश स्वदृष्टि कुमयूरा कृ १० १० हानसत्

मानियपूवनादृष्टा पाशाचमना दीकं रुखा दद्यात्॥ तच्च सम
 यदवता हानदवगा प्रव १० १० महावा १० इवीरुयवाधिवि
 वृषामृतकंचिकथरू॥ ॥ धननिनां कुनयाय॥ पीजासम
 तवया आगय॥ गुं आहल २ हल य २ ईं रु द्रस्वाहा॥ मिसली क
 नपीया आगय॥ गुं आ वक्रवक्रसर्वा ववतमल्ला पनय ईं रु
 स्वाहा॥ ॐ कापकानपिया आगय॥ गुं आ० सर्वपापविघ्नमा
 वां रुस्मी कवृय ईं रु द्रस्वाहा॥ पीजा नपीया आगय॥ गुं आ० रु
 व २ सं रु व ॐ स्त्रीयववविघ्नधन० वृवव ईं रु द्र॥ गं रतं रत
 य॥ पुष्पसंघादका र्थी प्रमी रु स्वाहा॥ ॥ धनधूप धन॥

ॐ आ वक्रपूष हान सं रता ॥ आ वही नय॥
 ईं रु द्रस्वाहा॥

लगवंग्रीमदग्रीसंपूर्णकलसार्चन. विष्णुध्वज. महंकातन
 न्दीकध्वज. पंचगमाता. गीतश्री. गीचक्रसंवद. वज्रवा
 ग्राही. वावृहीवेग्नानव. दधतारुहायकसमावाधनाय. लग
 वंसद्वज्रवीशावाजंनमस्तुते. कर्तुमिच्छाम्यहं नाथं स धुलं
 कवक्षत्मकं. गिर्यातां मनकं याय. युष्माकंपूजनाय च. न
 मस्तुतस्तु लगवंप्रसादकं. समंत्याहं तु मावृद्धा. अस्मिन्
 दिक्कसिद्धिगा. वज्रसत्त्वहमावर्षी दधकल्पयास्यहं. ॐ देव
 ऊधूपंतिसंप्रयामि॥ ॥ स्वस्ववगुहकाय॥ वाचार्चनय॥ ह
 गंवंग्रीमदग्रीसंपूर्णकलसार्चनगणेशमहंकातन. नन्दिक

ध्वज. पंचगमाता. वज्रसम्बन्ध. वज्रवाग्राही. वावृही. वेग्नान
 व. रुहायकस्य पाशं प्रतिकुत्वाहा॥ ॥ स्वानवाय॥ कुं
 र्पवेवाचनाय स्वाहा॥ अक्रासाय स्वाहा॥ वत्संरुवाय स्वा
 हा॥ अमिताय स्वाहा॥ अमाद्यसिद्धिय स्वाहा॥ लोचनाय
 स्वाहा॥ मामकीय स्वाहा॥ पाशुवाय स्वाहा॥ नावाय स्वाहा॥
 ॥ गणेशाय स्वाहा॥ गणेशपतीय स्वाहा॥ गणेशविपक्षय स्वाहा॥ गण
 शवाय स्वाहा॥ गणेशपतीपूजीताय स्वाहा॥ गजवक्राय स्वाहा॥
 धनाधिपतय स्वाहा॥ ॥ महंकातनाय स्वाहा॥ कुंमंमहाकाला
 य स्वाहा॥ महाकालीय स्वाहा॥ कवालीय स्वाहा॥ कंकालीय

स्वाहा॥ कृतिकं च गीय स्वाहा॥ चन्द्र च वीय स्वाहा॥ ॥ सगं
 सोमान॥ नन्दीकं च वीय स्वाहा॥ आयुर्वृद्धिय स्वाहा॥ ऊरु
 वृद्धिय स्वाहा॥ धनवृद्धिय स्वाहा॥ पुहानवृद्धिय स्वाहा॥ स
 कानवृद्धिय स्वाहा॥ महा सखवृद्धिय स्वाहा॥ ॥ एतन्म
 स्यात्॥ नन्दाय स्वाहा॥ रुद्राय स्वाहा॥ ऊरुय स्वाहा॥ सो
 म्याय स्वाहा॥ कपिलाय स्वाहा॥ पंच (ग) मातृकं च ऊपुष
 प्रतिक स्वाहा॥ ॥ इत्येकं सिक मयान॥ गीय स्वाहा॥ नन्दी
 य स्वाहा॥ श्रीवसंधाय स्वाहा॥ ॥ महानियान॥ पुंसकि
 रीय माहा॥ वामाय स्वाहा॥ रवधुवाहाय स्वाहा॥ वपीणीय स्वा

हा॥ समयक वाटक काय स्वाहा॥ विस्मयक वाटक काय स्वाहा॥
 समय विस्मयक वाटक काय स्वाहा॥ ॥ सिद्धयान॥ पुंसं व
 ऊवावाहीय स्वाहा॥ हायाय मिनीय स्वाहा॥ डीं माहनीयं
 स्वाहा॥ डीं डीं संचावही स्वाहा॥ डैं डैं संचावहीय स्वाहा॥
 रुद्रचक्षु काय स्वाहा॥ ॥ धर्मीयान॥ पुंसं वही वही
 नृन डीं स्वाहा॥ श्रीरुद्राय स्वाहा॥ आगंधवपी भय स्वाहा॥
 आदीयानपी भय स्वाहा॥ धर्मचक्राय स्वाहा॥ संहारगचक्राय स्वा
 हा॥ निर्वाणचक्राय स्वाहा॥ महासखचक्राय स्वाहा॥ ॥
 रवचक्राय॥ पुंसं नन्दाय स्वाहा॥ पंचमानं सय स्वाहा॥ विवसा

नंदाय स्वाहा ॥ सहजानंदाय स्वाहा ॥ ॥ मन्त्राय नमः ॥ कुंभेश्वर
 वाय स्वाहा ॥ मानिरुद्राय स्वाहा ॥ पूर्णरुद्राय स्वाहा ॥ धनं
 य स्वाहा ॥ वैश्वकर्त्राय स्वाहा ॥ ॥ पंचायतपूजाय स्वाहा ॥
 ॥ सर्वव्यापि रुद्राय नमः ॥ गगनाधिपति त्रिनेत्र ॥ नंदाय
 कं महाबाहुं वै वाचनमस्तु ॥ ॥ नमस्तु वज्रसत्ताय वज्र
 त्ताय नमः ॥ नमस्तु वज्रधर्माय नमस्तु वज्रकर्म ॥ ॥
 हं वं पंचमंदवकार्यसिद्धि विनायक ॥ सो रा ग प व संपन्न
 दहि म सुख संपदं ॥ ॥ नमस्तु महाकाय ॥ कृष्णवर्ण
 मानं बृहत् सत्तन वक्रं ॥ कर्त्तिकपावैताथं महाकालं नमा
 धव

म्पहं ॥ ॥ त्रुं संविजनीरुं सर्वकामार्थसिद्धिदं ॥ नाता
 नृपं धवं दं ॥ वंदं ग्रीधनं ऊय ॥ ॥ प्रसिद्धिश्च महात
 श्री सर्वसंप्रदायकं ॥ नंदारुद्रा ऊया सोम्या कपी ला य पं
 च (गम) मा रुं क ए नमस्तु ॥ ॥ वसं धरा सदानत्वादा विद्र
 न वता वती ॥ साधना वायका दवी ल श्री सिद्धि वल प्रदा ॥ ॥
 मम श्री वक्र सत्त्व वाय ॥ सर्वहृद् न सं दं रुद्रा गद र्थ प्रसादक ॥
 चिकामति द्रवी रुं श्री सत्त्व वं नमस्तु ॥ ॥ नत्वा श्री वक्राया
 ही सर्वपापपवमा चती ॥ मा व विश्वं स नी दवी वृद्ध तं रुद्रा
 यती ॥ ॥ नीलनीला चनी लं रुद्रा रुद्रा संग संगी नी ॥ रुद्रा रुद्रा

॥ ॐ उग्रचक्राय ॥ ध्याय स्वाहा ॥ बुद्ध्याय ॥ ध्याय स्वाहा ॥ ३
 ज्ञाय ॥ ध्याय स्वाहा ॥ कामाभीय स्वाहा ॥ विष्णवेय स्वाहा ॥ वावा
 हीय स्वाहा ॥ ॐ त्राय तीय स्वाहा ॥ वामधुमाय स्वाहा ॥ माहात
 म्नीय स्वाहा ॥ गंगाय नमः स्वाहा ॥ पद्मनाभाय स्वाहा ॥ मम
 हाकालाय वज्रपुष्पप्रदिकु स्वाहा ॥ ॥ पंचायनानपूजा
 वासा गोत्र ॥ ॥ श्रीगंगा नमः स्वेव चन्द्रार्थका धरे वरं
 उम्भरुहे वरं ॥ स्वेव कपाली ही वनरु ॥ संहार वरं वरं स्वेव वरं
 ववायन ममुग ॥ ॥ बुद्ध्याय नीमहा दवी नृदाय नीत
 ॥ ध्याय ॥ कामाभी च नमः दवी विष्णवे च नमः ॥ वावाही च

नमः दवी ॐ त्राय नीमो वी सं विरानिर्मो काली कादवी
 महालक्ष्मी नमः मुग ॥ ॥ नमः ॥ ॐ का व ॥ ॥
 उग्रमानवा नमः वरुण मधुलद वरं ॥ ॥ कथल वरं ॥ ॥
 गुनपूजा ॥ दक्षिण काय ॥ पंचाङ्ग ॥ द्रुमापन ॥ सिद्ध मह
 नि ॥ मगंधोका काय ॥ द व नमः काय ॥ सिद्ध महनी ॥ श्री
 गंग नमः ॥ गुनवा नमः प्रमख स कलं या निया ॥ स्नाना ॥ पंचसद्रका ॥
 विया ॥ दक्षिण मरिच वनिया ॥ ममय काय ॥ स्नाच ॥ थापिका का
 य ॥ वनिहाय ॥ ॥ ॥ पृथिकल सपूजा ॥ ॥ ॐ ॥

२३

सम्बन्ध १०३१ मिनिमाचगुक्रया षष्ठमिआदिप्रवानथपुद्रुथपू
 सकसिद्रयकादीनशुल॥ ॥लिखितंमानदवसस्कात्रिकव
 क्रमहाविहानयाश्रीवञाचार्यवञाऊनहनुवाहायाहर्षआनिया
 नथपूषकचायावियाशुलथपूषकसनानलाख्यायमशुल॥
 यादगंपूषकंदष्टानादगंलिषिगंनया॥यदीगुहमगुह्यावाममदषान
 दीयते॥ ॥गुरुममुखंवेदात्॥ ॥अहं॥ ॥



93
23

॥ कुनमावासीश्वराय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ श्रीनमो भगवते वासुदेवाय ॥

आशा सहकारि

1480 I

ASMA ARCHIVES